डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2006-2008
आर. एन. आई - राजहिन /2003/9899
प्रकाशन दिनांक : 5 फरवरी - 2007 . मूल्य : पाँच रुपये

अजायब बानी

(गुरु महिमा)

वर्ष - चार | अंक - दसवाँ | फरवरी-2007 | मासिक पत्रिका

अमोलक नाम *14 जनवरी 1993 : मुम्बई* 3
परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा पश्चिमी प्रेमियों को एक सन्देश

भ्रम *6 फरवरी 1994 : 16 पी.एस. आश्रम राजस्थान* 9
सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज [स्वामी जी महाराज की बानी]

काल की रचना *28 दिसम्बर 1988 : 16 पी.एस. आश्रम राज.)* 27
परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

कृपाल यही संदेशा देता 32
एक शब्द

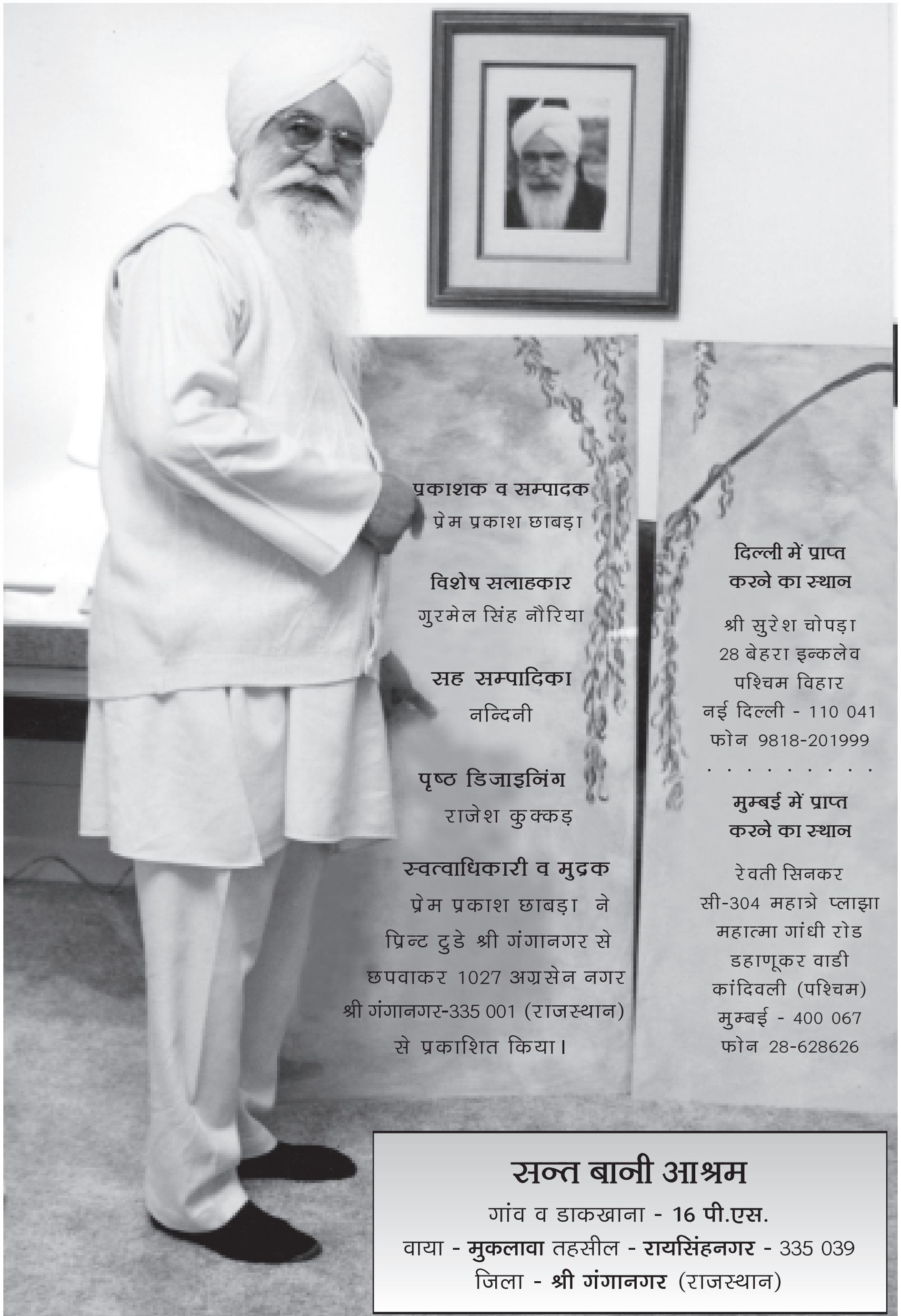

प्रकाशक व सम्पादक
प्रेम प्रकाश छाबड़ा

विशेष सलाहकार
गुरमेल सिंह नौरिया

सह सम्पादिका
नन्दिनी

पृष्ठ डिजाइनिंग
राजेश कुक्कड़

स्वत्वाधिकारी व मुद्रक
प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने
प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से
छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर
श्री गंगानगर-335 001 (राजस्थान)
से प्रकाशित किया।

दिल्ली में प्राप्त करने का स्थान

श्री सुरेश चोपड़ा
28 बेहरा इन्कलेव
पश्चिम विहार
नई दिल्ली - 110 041
फोन 9818-201999

. . . .

मुम्बई में प्राप्त करने का स्थान

रेवती सिनकर
सी-304 महात्रे प्लाझा
महात्मा गांधी रोड
डहाणूकर वाडी
कांदिवली (पश्चिम)
मुम्बई - 400 067
फोन 28-628626

सन्त बानी आश्रम

गांव व डाकखाना - **16 पी.एस.**
वाया - **मुकलावा** तहसील - **रायसिंहनगर** - 335 039
जिला - **श्री गंगानगर** (राजस्थान)

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा पश्चिमी प्रेमियों को एक महत्त्वपूर्ण सन्देश

अमोलक नाम

14 जनवरी 1993. *मुम्बई*

मैं सबसे पहले अपने गुरुदेव परमात्मा कृपाल का धन्यवाद करता हूँ, जिन्होंने हमें यह '**अमोलक नाम**' की दात बख्शी; इंसान का जामा दिया। सभी सन्तों ने 'नाम' को अमोलक दात कहकर बयान किया है। गुरु रामदास जी कहते हैं:

नाम अमोलक रतन है, पूरे सतगुरु पास।
सतगुरु सेवा लगयां, कढ रतन देवे प्रकाश॥

मैं सदा ही बताया करता हूँ कि परमात्मा की भक्ति ही अमोलक धन है, यही हमारे साथ जाएगी। यह काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की नाशक है और परमात्मा के दरबार में सच्ची इज़्ज़त की दाता है। जब तक हम नाम-रूप सन्तों के पास नहीं जाते तब तक हम इस **अमोलक नाम** को प्राप्त नहीं कर सकते।

परमात्मा के भक्त परमात्मा से बड़े नहीं होते; परमात्मा के शरीक नहीं होते। वे परमात्मा के प्यारे बेटे होते हैं। प्यारा बेटा अपने पिता से जो चाहे सो करवा सकता है।

प्यारेयो ! मुझे आपके साथ अभ्यास में बैठकर बहुत खुशी हुई। कई प्रेमियों ने अपने अभ्यास के अच्छे अनुभव बताए। कई प्रेमियों ने बताया कि हम खुष्क ही आए हैं। उन प्रेमियों से कहा गया था कि इस मौके का फायदा उठाएं। उन्होंने कहना मानकर अभ्यास किया मैं उनसे भी खुश हूँ। उनकी आत्मा को जिस चीज़ की भूख थी, वह परमात्मा कृपाल ने पूरी की।

मैं परमात्मा कृपाल की महिमा को किस तरह बयान करूँ ! मैं तो बस यही कहा करता हूँ :

तिल तिल दा अपराधी तेरा, रत्ती रत्ती दा चोर।
पल पल दा मैं गुनही भरया, बख्शी अवगुण मोर॥

हुजूर कृपाल हमें इस संसार में प्यार और नम्रता सिखाने के लिए ही आए। आप प्यार का समुद्र और मैं प्यार का पुजारी था। आपके चरणों में बैठकर मुझे जो प्यार मिला, मैं उसी प्यार को आप लोगों में बाँट रहा हूँ।

मैंने सहजोबाई की बानी पर कई सतसंग दिए हैं। सहजोबाई ने अपने गुरु चरणदास के चरणों में बैठकर जो दया प्राप्त की उसने उस दया को अपनी लेखनी द्वारा समझाने की कोशिश की। आप कहती हैं, ''गुरु परमेश्वर से मिलवाता है, गुरु परमेश्वर एक है।''

परमात्मा हमारे शरीर में समाया हुआ है। उसके रहते हुए हम कई बार किसी के पति बने ! कई बार किसी की पत्नियाँ बने ! कितने ही बच्चे पैदा किए ! कितने ही परिवार बसाए ! परमात्मा चोर को चोरी करने से नहीं रोकता। किसी को बुरा काम करने से नहीं रोकता। जिस तरह मेहंदी के पत्तो में मेहंदी का रंग छिपा है। फूल के अंदर खुशबू और पत्थर के अंदर अग्नि छिपी है उसी तरह गुरु हमारे अंदर 'नाम' का दीपक जलाकर दिखाता है कि परमात्मा हमारे अंदर ज्योत-रूप नाद-रूप होकर विराजमान है।

परमात्मा कृपाल ने दया करके हमें इस कार्यक्रम में इकट्ठे होने का मौका दिया। आप लोग अपने देश में पहुँचकर इस पवित्र यात्रा को याद रखें। इस यात्रा से प्रेरणा लेकर अपना भजन-अभ्यास जारी रखें, डायरी जरूर रखें।

अमेरिका की कहावत है कि किसी पेड़ का फल खाने से ही उस फल की मिठास का पता लगता है। भक्ति करने से ही भक्ति के फायदे का पता लगता है।

सन्तमत परियों की कहानी नहीं। सन्तमत सच्चाई पर कायम है। यह एक सच्चाई है कि परमात्मा हमारे अंदर है। सन्त हमें वही रास्ता

बताते हैं। परमात्मा से मिलने का रास्ता भी अंदर है, वह अंदर से ही मिलता है। गुरु रामदास जी कहते हैं:

सतगुरु सेवा लगयां, कढ़ रतन देवे प्रकाश।

आप सब लोगों ने अपने घरों में जाकर रोजाना भजन-अभ्यास करना है। अपने मन और आत्मा को साफ रखना है। जहाँ एक तरफ आपका 'शब्द-रूप' गुरु आपके अंदर आपकी मदद करने के लिए बैठा है, वहाँ दूसरी तरफ काल भी आपके अंदर मौजूद होता है।

जो लोग भजन नहीं करते काल उन्हें अपने तरीके से बहका देता है। काल हमेशा यह कोशिश करता है कि आप भजन-सिमरन न करें। जब आप अभ्यास पर बैठते हैं तो काल किसी प्रेमी के अंदर बैठकर आपकी प्रंशसा करवाता है; इस तरह आप काल के प्रभाव में आकर अपनी प्रशंसा सुनते है और अभ्यास छोड़ देते हैं।

सोचकर देखें ! अगर हमनें अच्छी कमीज पेन्ट या कोट पहन रखा हो जिसमें हम सुंदर लग रहे हों ! कोई हमसे यह कहे, ''आप

बहुत सुंदर लग रहे हैं, आपने बहुत अच्छे कपड़े पहने हुए हैं।'' तब हमें यह कहना चाहिए, ''यह दर्जी का कमाल है जिसने इतने अच्छे कपड़े सिले हैं।'' लेकिन हमारा मन हमारे अंदर बैठा है वह हमें यह महसूस ही नहीं होने देता कि दर्जी की मेहनत की वजह से ये कपड़े अच्छे बने हैं; जिन्हें पहनकर हम सुंदर दिख रहे हैं। इस सबका श्रेय दर्जी को देने की बजाय हम सोचते हैं कि हमने इन कपड़ो को पहना हुआ है इसलिए ये अच्छे लग रहे हैं।

अगर कोई हमसे यह कहता है कि हम बहुत अच्छे अभ्यासी हैं, बहुत अच्छे शिष्य हैं तो हमें गर्व से फूलना नहीं चाहिए। हमें इसका श्रेय अपने गुरु को देना चाहिए। गुरु का 'शब्द' हमारे अंदर होने की वजह से ही लोग हमें औरों से अच्छा समझते हैं। इसमें हमारी अपनी कोई बड़ाई नहीं; यह गुरु की दया ही है।

हमारे प्यारे सतगुरु सारे जहाँ के मालिक थे। आपने भी इस बात को छिपाकर रखा अगर किसी ने आपकी प्रशंसा की तो आपने यही कहा, ''यह सब मेरे प्यारे सतगुरु बाबा सावन सिंह जी की ही दया है।'' जिन लोगों को आपके चरणों में बैठने का मौका मिला वे जानते हैं कि आपके अंदर अपने गुरु की बहुत याद थी। आप अपने गुरु के साथ इतना प्यार करते थे कि किसी ने एक बार आपसे यह कहा कि इस कपड़े को महाराज सावन सिंह जी का हाथ लगा हुआ है तो आपने उस कपड़े को अपने सिर के ऊपर रख लिया। आप महाराज कृपाल का लिखा हुआ नम्रता भरा भजन पढ़ते हैं:

मैथो चंगियाँ जूतियाँ तेरियाँ।
मैं तती दूर पावां फेरियाँ॥

हे सतगुरु ! मुझसे तो अच्छी आपकी जूतियाँ हैं जो हमेशा आपके पैरों में रहती हैं। कबीर साहब प्यार से कहते हैं:

सपने हू बरड़ायके, जे मुख निकसे नाम।
ताके पग की पनही, मेरे तन को चाम॥

अगर 'नाम' की कमाई करने वाले के मुँह से सोते हुए सपने में बड़बड़ाते हुए भी परमात्मा का नाम निकलता है तो मैं अपने शरीर के चमड़े की जूती बनाकर उसके पैरों में पहनाने के लिए तैयार हूँ।

मेरे कहने का भाव कि आपने दया-मेहर करके हमें अपनी भक्ति और याद में बैठने का मौका दिया। हमने आपके वचनों को याद रखना है, ''सौ काम छोड़कर सतसंग में जाएं, हजार काम छोड़कर भजन-अभ्यास में बैठ जाएं। अपने शरीर को तब तक अन्न की खुराक न दें जब तक आत्मा को 'शब्द' की खुराक न दे लें।''

अगर हम खाना न खाएं ! हमारा शरीर कमजोर हो जाता है। हमारी आत्मा जन्मों-जन्मों से कमजोर है, भूखी है; इसकी खुराक 'शब्द-नाम' की कमाई है। गुरु गोविंद सिंह जी कहते हैं:

सुखी वसे मोरो परिवारा।
सेवक सिख सभै करतारा॥

आप मालिक के आगे यही अरदास करते हैं, ''मेरी संगत, मेरा परिवार सदा सुखी रहे। सन्तों को संगत अपने प्राणों से भी ज्यादा प्यारी होती है। सन्तों का परिवार सन्तों की संगत ही होती है।''

आखिर में, मैं आपकी वापिसी यात्रा की शुभकामना करता हूँ। आपसे यह भी आशा करता हूँ कि आप अपने देश में पहुँचकर सतसंग का कार्यक्रम जारी रखेंगे, 'शब्द-नाम' की कमाई करेंगे।

U U U

16 पी.एस. आश्रम राजस्थान में सतसंग के कार्यक्रम

2 मार्च से 4 मार्च - 2007

31 मार्च से 2 अप्रैल - 2007

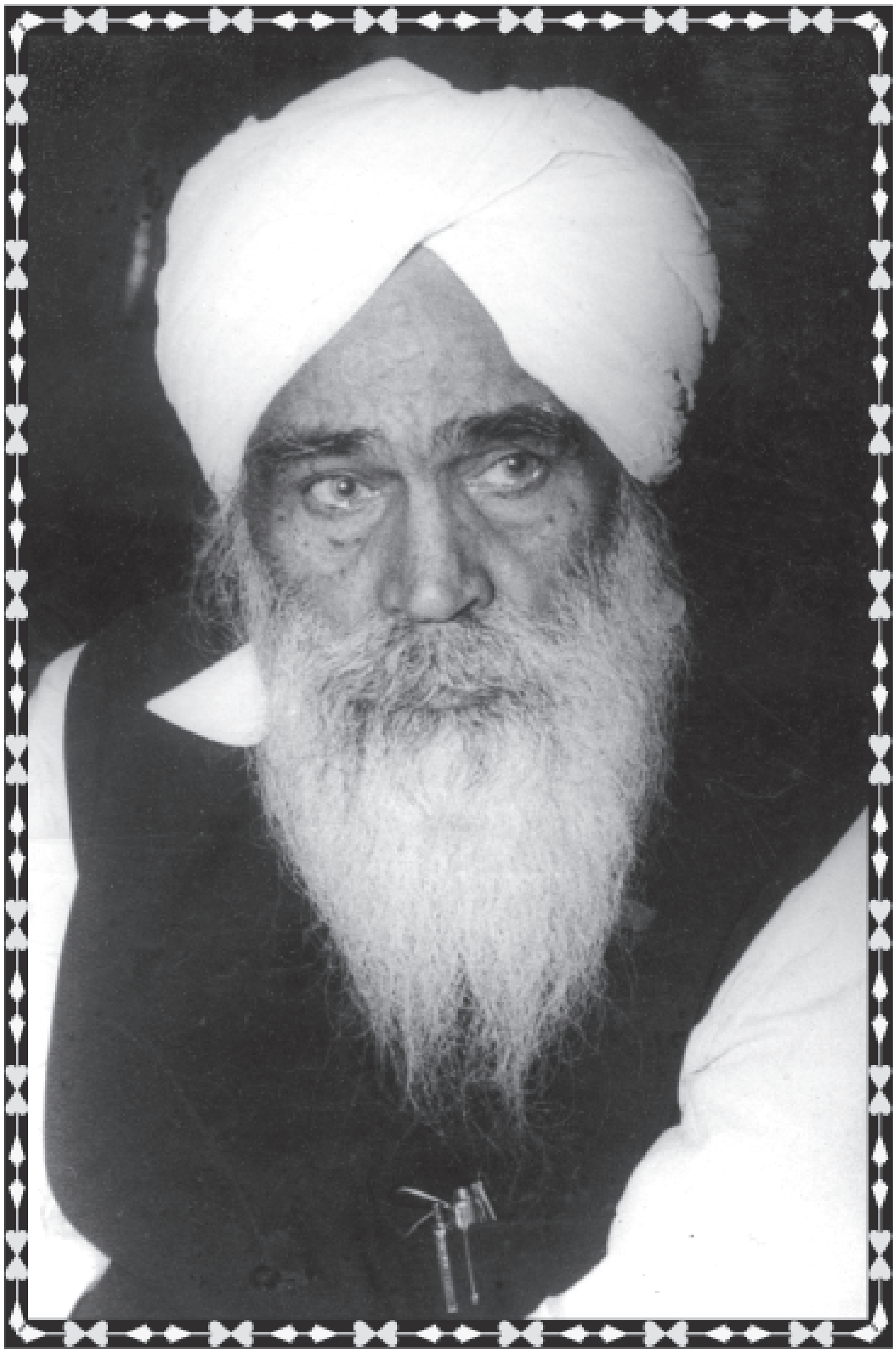

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज. 16 पी.एस. आश्रम, राजस्थान

भ्रम

6 फरवरी 1994.

स्वामी जी महाराज की बानी

परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में कोटन-कोट बार नमस्कार है, जिन्होंने हमें अपना यश करने का मौका दिया है। आज के पवित्र दिन पर सारी संगत को बहुत-बहुत बधाई व शुभकामना। सन्त-महात्मा मालिक के प्यारे परोपकार के लिए ही संसार में आते हैं। वह परमात्मा कभी कबीर, कभी गुरुनानक के रूप में दस जामें धारण करके आया।

इसी तरह स्वामी जी महाराज से लेकर हमारे गुरुदेव महाराज कृपाल इस संसार में आए। उन्होंने परमात्मा के हुक्म में परमात्मा के नाम का होका दिया,हम भूले-भटके जीवों को परमात्मा के साथ जोड़ा।

सन्त-महात्मा हमें बताते हैं कि असल जन्मदिन वह है जिस दिन हमारी आत्मा नौं द्वारों में फैले हुए ख्यालों से निकलकर मन-इन्द्रियों की गुलामी से आजाद हो जाती है। सिद्धों ने गुरु नानकदेव जी से पूछा कि आपका जन्म-मरण कैसे खत्म हुआ? गुरु नानकदेव जी ने कहाः

सतगुरु के जन्में ते गवन मिटाया।

जब हमारा जन्म सतगुरु के घर में हुआ तो हमारे जन्म-मरण का चक्कर खत्म हो गया। हम अपने परमार्थ के लिए महापुरुषों के पवित्र जन्मदिवस को एक यादगार के रूप में मनाते हैं। असली श्रद्धांजलि यह है कि वे हमारे जिम्में जो भजन-अभ्यास का कार्य लगा गए हैं, हम वह कार्य करें। कबीर साहब कहते हैंः

तरवर सरवर सन्तजन, चौथे बरसे मेह।
परस्वार्थ के कारणें, चारे धारे देह॥

बादल अपना पानी नहीं पीते। पेड़ अपना फल नहीं खाते। नदियाँ दुनिया के भले के लिए बहती हैं। इसी तरह सन्त-महात्मा मालिक के

हुक्म में सच्चे दिल से हमारी आत्मा की सेवा करते हैं। महात्मा के परोपकार के बराबर कोई परोपकार नहीं।

जब तक परमात्मा का हुक्म था आप हमारे बीच रहे। आपने पच्चीस साल 'शब्द-नाम' का होका दिया। आपकी जुबान पर जब आपके गुरु सावन का नाम आता तो आपकी आँखों से पानी छलक पड़ता। जिन प्रेमियों ने अपनी आँखों से यह नजारा देखा है वे जानते हैं कि हुजूर कृपाल के दिल में अपने गुरु सावन के लिए कितना प्यार था।

सन्तों का यही उपदेश है कि आप अपनी आत्मा को अभ्यास द्वारा स्थूल, सूक्ष्म, कारण तीनों मंडलो से ऊपर ले जाकर रूहानी देश की सच्चाई को अपनी आँखों से देखें ! महात्मा हमें अंधविश्वास नहीं देते, महात्मा खुद 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं और हमसे भी 'शब्द-नाम' की कमाई करवाते हैं।

महाराज कृपाल कहा करते थे, "पढ़ा-लिखा ही पढ़ा सकता है, पहलवान ही पहलवानी सिखा सकता है। जिसने अपनी जिंदगी में खुद अभ्यास किया है वही जानता है कि बिना अभ्यास कुछ भी प्राप्त नहीं होता।" आज हम उनकी याद में बैठे हैं।

सब पर दया करो (3) गुरु पाल,
सब के कष्ट हरो (3) गुरु पाल (2)
सब पर दया करो

हम बालक तुम पिता हमारे, तुम बिन बिगड़ी कौन सवारे, (2)
तमस हरो गुरु ज्योति जगाओ, भटक रहे हैं राह दिखाओ, (2)
भुला दिया अगर तुमने ही हमको, कौन करेगा ध्यान,
सब पर......

मानव बनकर हम जी पाऐं, इस धरती पर स्वर्ग सजाऐं, (2)
कटे पाप की काली कारा, बहे नाम की अमृत धारा, (2)
सब संगत का मान बड़े नित, सबका हो कल्याण,
सब पर......

जिसके मन में मूरत तेरी, जिसके मुँह पर तेरा नाम, (2)
पलक झपकते बन जाते हैं, उसके बिगड़े सारे काम, (2)
दया मेहर हो जाए तेरी, मेरा बन जाए काम,
सब पर......

कृपाल गुरु बस इतना वर दो, तन मन धन सब निर्मल कर दो, (2)
हर दुविधा से हो छुटकारा, सब में दीखे रूप तुम्हारा, (2)
सच्चे मन से करे तुम्हारा, अजायब गुणगान,
सब पर.....

सब सन्त-महात्माओं का एक ही संदेश है कि शान्ति 'नाम' में है। चाहे हमें दुनिया का कितना भी धन-पदार्थ, शौहरत, बाल-बच्चें मिल जाए मन फिर भी तृप्त नहीं होता। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

लख जोड़े करोड़ जोड़े, मन परे-परे को होड़े रे।

कबीर साहब कहते हैं, ''आपके अंदर बाग-बहारे, सूरज, चन्द्रमा सब कुछ है ; इन्हें पैदा करने वाला परमात्मा भी आपके अंदर है। आप अंदर 'नाम' की सीढ़ी पर चढ़कर देखें ! इस दुनिया को पैदा करने वाला बड़ी ही युक्ति से हर एक के अंदर बैठा हुआ है। इंसान ने हाथी, घोड़े, चीते अपने वश में किए हुए हैं और बड़े-बड़े राज्यों पर जीत हासिल की है लेकिन मन को वश में नहीं कर सका।''

हमारा मन विषय-विकारों में फँसकर इस तरह भटका हुआ है कि यह हमें अंदर शान्ति के देश में पहुँचने ही नहीं देता। अभ्यासी की सबसे बड़ी रुकावट उसका मन है। गुरु रामदास जी कहते हैं:

मन खिन खिन भरम भरम बहु धावे, तिल घर नहीं वासा पाईऐ।

मन और आत्मा की गाँठ हमारी दोनों आँखों के दरमियान है। मन पल-पल बाहर जाता है, मन की ताकत को समझना बहुत मुश्किल है। कबीर साहब कहते हैं, ''आप जागें ! यह मन बिना सिर का चोर है यह दिखाई नहीं देता। आपके नगर में इस चोर की पाँच जबरदस्त फौजें काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार दाखिल होती हैं।''

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''आप भजन करके शान्ति प्राप्त करें, शान्ति आपके अंदर है।'' गौर से शब्द सुनेंः

भजन कर मगन रहो मन में॥ भजन कर मगन रहो मन मैं॥
जो जो चोर भजन के प्रानी। सो सो दुक्ख सहें॥

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''जो लोग इस संसार में आकर भजन-सिमरन नहीं करते, परमात्मा के लिए थोड़ा सा भी समय नहीं निकालते वे इस संसार में दुःखी आते हैं और दुःखी ही चले जाते हैं। ऐसे लोग कभी काम के, कभी क्रोध के हाथों दुःखी रहते हैं।''

आलस नींद सतावे उनको। नित नित भ्रम बहें॥

ऐसे लोग आलसी हो जाते हैं, नींद के दास बन जाते हैं। वे सुबह नाश्ता करने में भी आलस करते हैं कि थोड़ी देर और सो लें। भजन न करने वाले **भ्रम** का शिकार हो जाते हैं। लुकमान हकीम मुर्दों को भी जिन्दा कर देते थे लेकिन **भ्रम** की दवाई उनके पास भी नहीं थी। यही भ्रम है जो हम दिन-रात सोचते हैं कि मेरी कौम है, मेरे बीवी-बच्चे हैं। मैं इतने धन-दौलत का मालिक हूँ, दुनिया मुझे नमस्कार करती है।

प्यारेयो ! अंत समय में बीवी-बच्चे, धन-दौलत और फौजें साथ नहीं जाती। यहाँ का सामान यहीं रह जाता है अगर परमात्मा के दरबार में हमारी इज्ज़त नहीं ! हमें सलाम करने वाले भी पछताते हैं।

हम **भ्रम** में भूले हुए हैं कि शायद हमारे लिए सदा ही ऐशो-ईशरतें रहेंगी, भजन तो और लोगों के लिए है। नहीं जानते कि कब मौत ने आकर गला दबा लेना है? हम चाहे मौत को भूल जाएं लेकिन मौत नहीं भूलती। फरीद साहब कहते हैंः

जित दिहाड़े धनवरी, साहे लए लिखाए।
मलिक जो कन्नी सुणींदा, मुँह दिखाले आए॥
जिन्द निमाणी कढ़िए, हड्डां कु कड़काए।
साहे लेखे न चलणीं, जिन्दू को समझाए॥

हमारे देश में रिवाज है कि माता-पिता बच्चों की शादी का दिन निश्चित करते हैं। लड़के वाले उस निश्चित दिन बारात लेकर लड़की के घर आ जाते हैं। हम देखते हैं कि लड़कियाँ ससुराल जाते हुए रोती हैं क्योंकि उन्हें माँ-बाप और भाई-बहनों का प्यार छोड़ने में मुश्किल होती है लेकिन दूल्हा दुल्हन को लेकर ही जाता है।

इसी तरह वह इज़रा ईल फरिश्ता निश्चित समय पर आत्मा को लेने के लिए आ जाता है। मौत के समय हम भी रोते हैं, अपने पास बैठे माँ-बाप, भाई-बहनों से फरियादें करते हैं कि हमें रख लें! किसी अच्छे डाक्टर हकीम के पास ले जाएं लेकिन वह इज़रा ईल फरिश्ता आत्मा को लेकर ही जाता है।

जब हम सतसंग में जाते हैं उस समय समझ आती है कि यह जीवन तो क्षणभंगुर है नहीं जानते कब आवाज लग जाएगी! हम **भ्रम** में भूले हुए हैं। इस **भ्रम** में वही भूले हुए हैं जो इन्सानी जामें में भजन नहीं करते, मनुष्य जन्म की असलियत को नहीं समझते।

काम क्रोध के धक्के खावें। लोभ नदी में डूब मरें॥

कभी काम में इतने डूब जाते हैं कि अपनी स्त्री को छोड़कर पराई स्त्रियों का भी परहेज नहीं करते। इसी तरह कामवश हुई औरतें अपने धर्म को छोड़कर दूसरे मर्दों का संग करती हैं। गुरु नानकदेव जी अपनी बानी में बताते हैं:

कामवन्त कामी बहु नारी, परगृह जो न चूके।
दिन परत करे करे पछतापे, लोभ मोह में सूके॥

आत्मा ठोकर मारती है कि हम पाप कर रहे हैं लेकिन आत्मा की आवाज को नहीं सुनते। कामवश हुआ इंसान रिश्ते को ही भूल जाता है उसे नज़दीक खड़ा इंसान दिखाई नहीं देता। कबीर साहब कहते हैं, ''कामी बेशर्म हो जाता है उसे होश ही नहीं रहता। काम से बचता है तो क्रोध के वश हो जाता है; क्रोध घर-समाज और मुल्क को तबाह कर

देता है। क्रोधवश होकर एक-दूसरे से लड़ते झगड़ते हैं, भाई-भाई का सिर मूली-गाजर बना देता है। लोभ का तो कहना ही क्या है?''

गुरु संग प्रीत करें नहिं पूरी। नाम न डोर गहें॥

अब आप प्यार से कहते हैं, ''ऐसे लोग गुरु परमात्मा के बारे में तो सोच ही नहीं सकते। काम की गिरावट नीचे की ओर और 'नाम' की चढ़ाई ऊपर की ओर है। ऐसे लोग सोचते हैं कि ये किसी कमी की वजह से सन्तों के पीछे फिरते हैं।'' कबीर साहब कहते हैं:

कामी क्रोधी लालची, इनसे भक्ति न होय।
भक्ति करे कोई सूरमा, जात वर्ण कुल खोय॥

तृष्णा अग्नि जलें निस बासर। नर्कन माहिं पड़े॥

अब स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''ऐसे लोग दिन-रात तृष्णा की आग में जलते हैं।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

कोटन में कोऊ जो भजन राम को पावे।
जग में उत्तम कढिए विरले केई के।
तृष्णा विरले ही की बूझे हे।

हम तृष्णाओं को पूरा करने के लिए पाप करते हैं, नाजायज धन जोड़ते हैं जो हमारे जीते जी ही समाप्त हो जाता है या फिर उस धन को बाल-बच्चे शराबों-कबाबों में उड़ा देते हैं। जो भजन-सिमरन नहीं करते उनकी इच्छाएं न पूरी हुई हैं न हो ही सकती हैं। जिंदगी में पापों का कष्ट मुफ्त में ही भुगतना पड़ता है।

संतन साथ विरोध बढ़ावें। उलटी बात कहें॥

ऐसे लोग हमेशा ही सन्तों का विरोध करते हैं, उन्हें निन्दा करने की आदत बनी हुई है। जब गुरु नानकदेव जी संसार में आए तो उन्होंने 'नाम' जपने के लिए ही कहा लेकिन विरोधियों ने कहा कि आप इनका उपदेश ने सुनें यह तो लोगों के दिमाग बिगाड़ते हैं। एक बार गुरु

नानकदेव जी कसूर के इलाके में गए। वहाँ के गाँव वालों ने आपको कुराहिया कहकर गाँव में नहीं आने दिया। आपने एक कोढ़ी की कुटिया में रात बिताई, कोढ़ी का कोढ़ खत्म हुआ।

इसी तरह गुरु अर्जुनदेव जी को बहुत कष्ट दिए गए। जून के गर्म महीने में गर्म तवे पर बिठाया गया, आपके ऊपर गर्म रेत डाला गया। गुरु गोविंद सिंह जी के बच्चे शहीद कर दिए, उन्हें आराम से नहीं बैठने दिया। आप तीन महीने तक नहा नहीं सके, आपने तीन महीने तक कमरकसा नहीं खोला। इन मालिक के प्यारों का यही कसूर था कि ये हम लोगों पर रहम करते थे।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जिस तरह भेड़ों के बाड़े में आग लग जाती है। लोग रहम करके उन्हें बाहर निकालते हैं लेकिन वे समाज की बंधी हुई उसी आग में खाक हो जाती हैं।'' जिस तरह बीमार आदमी को मिश्री कड़वी लगती है उसी तरह हमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की जहर चढ़ी हुई है।

जब सन्त उपदेश करते हैं, हमारे मन के घर में उत्पात उठता है कि अब हमें कैद होना पड़ेगा ! हमारा मन हमसे सन्तों की निन्दा करवाता है। हम ऐसी-ऐसी निन्दा करते हैं जो सुनी भी नहीं जा सकती। हम लोग तो यहाँ तक कह देते हैं कि सन्तों ने सतसंग को पाखंड बनाया हुआ है; इसलिए हम वहाँ नहीं जाते।

सन्तों के सतसंग में औरत-मर्द और गरीब-अमीर की एक जैसी इज्ज़त है। जब हम सन्तों की निन्दा करते हैं तो कुदरत का कानून हमें माफ नहीं करता, नर्कों में डाल देता है। सुखमनी साहब में गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

सन्त की निन्दा नानका बोहर बोहर अवतार।

आप सुखमनी साहब* की *निन्दा* वाली अष्टपदी पढ़कर देखें ! उसमें सन्त की निन्दा करने वाले को कभी कुत्ता, कभी घोड़ा, कभी

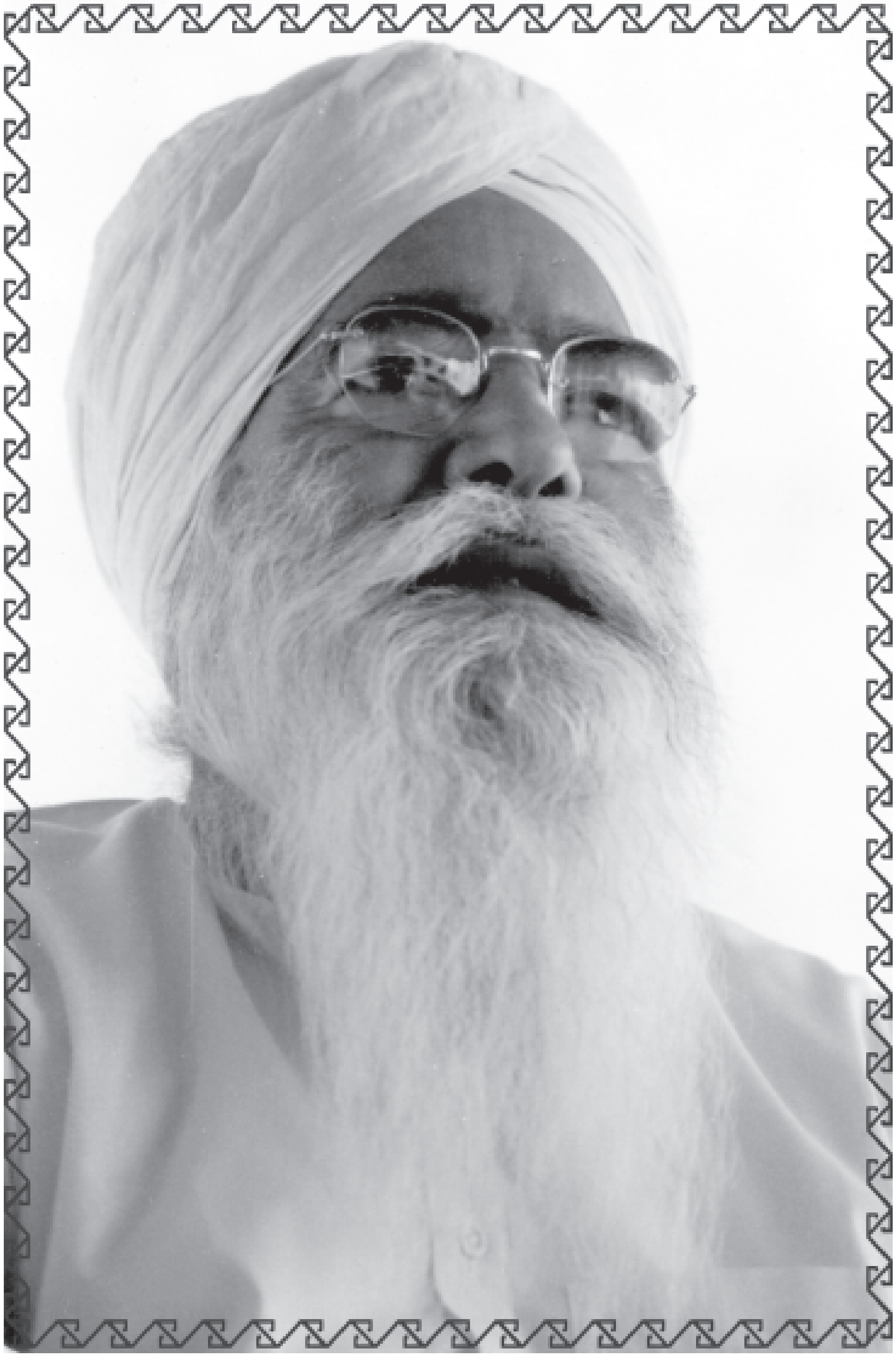

गधा तो कभी साँप की योनि में जाना पड़ता है। ऐसी हालत भजन न करने की वजह से होती है अगर भजन करते हों तो जान जाएं कि सन्तों के दिल में हमारे लिए कितना प्यार है।

हितकर सन्त उन्हें समझावें, ये माने नहीं माने आन।

कुछ गर्म विचारों के लोग हमारे सतगुरु महाराज सावन सिंह जी के आश्रम के सामने धार्मिक स्थान बनाकर उनका विरोध करते रहे। महाराज जी शान्ति के पुंज थे। आपने उन लोगों से कहा, ''आप लोगों को खाने की तकलीफ होती होगी, यहाँ गुरु का लंगर है आप खाना यहाँ खा लिया करें।'' महात्मा हमेशा ही हम पर रहम करते हैं।

सतसंग महिमा मूल न जानें। भेड़ चाल में नित्त पचें॥

भजन न करने वाले लोगों को सतसंग की महिमा का ज्ञान नहीं। कमाई वाले महात्मा की संगत को सतसंग कहा जाता है। जहाँ कुछ सामाजिक लोग इकट्ठे होते हों ! एक समाज दूसरे समाज को गालियाँ निकालता हो ! लोगों से चंदा लिया जाता हो ! उसे सतसंग नहीं कहा जाता। पूर्ण महात्मा अपने दस नाखूनों की मेहनत की कमाई से अपना पेट पालता है और लंगर में भी अपनी कमाई का पैसा डालता है। ऐसा महात्मा मुफ्त का सेवक है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

गुरु पीर सदाए मंगण जाए, ताके मूल न लग्गी पाए।
घाल खाए कुछ हत्थों दे, नानक राह पछाणें से॥

परमात्मा का दरवाजा इतनी आसानी से नहीं खुलता, जो संगत की सेवा करता है परमात्मा उसी के लिए दरवाजा खोलता है। जो सतपुरुष से मिलकर सतपुरुष का रूप हो गया है, उसे हम सतगुरु, परम सन्त या उनके नाम से पुकार लें कोई फर्क नहीं पड़ता। गुरु नानकदेव जी कहते हैं :

सतपुरुष जिन जांणया, सतगुरु तिसका नाओ।
तिसके संग सिक्ख उदरे, नानक हरि गुण गाओ॥

ऐसे महात्मा के सतसंग में जाकर हमारी आत्मा का उद्धार होता है। महात्मा के सतसंग में किसी की निन्दा, बुराई नहीं होती। सन्तमत न कोई समाज है न कोई मजहब है। सन्तमत का मतलब अपना सुधार करना है। हम 'शब्द-नाम' की कमाई करके अपना सुधार कर सकते हैं। हमारा विरोधी हमारी कमियों को खुले आम ही बता देता है हमें उसकी बात का बुरा नहीं मानना चाहिए ; महात्मा हमारी कमियों को कहानी के रूप में बता देते हैं। इसलिए सन्त कहते हैं:

निन्दक जीवे जुगन जुग, काम हमारा होय।
काम हमारा होय, बिना कौड़ी का चाकर॥
लक्क बनकर फिरे, करे त्रिलोक उजागर।
उसे हमारी सोच, पलक भर नहीं विसारे॥
लगा रहे दिन रात, प्रेम से देता गाली।

धन और मान भोग रस चाहें। रोग सोग में आन फसें॥

महाराज सावन कहा करते थे, ''जो लोग सन्तों के पास जाकर कहते हैं कि मेरी बीमारी दूर हो, बेरोजगारी दूर हो, मैं मुकद्मा जीत जाऊँ। ऐसे लोग सतसंग में न आएं अपने घरों में ही तशरीफ रखें। सन्तों की दुकान पर 'नाम' है। इंसानी जामें में 'शब्द-नाम' की कमाई करनी है अपने जीवन को सफल करना है।''

जब हमारी इच्छाएं पूरी नहीं होती तो हमारे अंदर अभाव आ जाता है। अगर कोई हमसे यह कह दे कि अमेरिका में मुफ्त जमीनें मिलती हैं तो हम सभी उस तरफ भाग खड़े होंगे लेकिन अपनी आत्मा के लिए कभी नहीं सोचते। भजन-सिमरन करने वाले ही अपनी आत्मा के बारे में सोचते हैं। ऐसे प्रेमी आकर मुझसे कहते हैं, ''बाबा जी ! मेरे भजन पर कुछ असर पड़ गया है, पहले तो मैं अंदर सब कुछ देखता था लेकिन अब पर्दा पड़ गया है।'' मैं ऐसे प्रेमियों से कहता हूँ, ''बेटा ! दुनिया की सोच कम करो और भजन में ज्यादा समय दो।''

भाग हीन मत हीन पराणी। नर देही बरबाद करें॥

भजन न करने वाले जीव परमात्मा के दिए हुए अमोलक इंसानी जामें को बर्बाद कर जाते हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

अपने जीव पर दया पा लो, चौरासी का फेर बचालो।

भजन-सिमरन करना, नेक बनना किसी पर कोई अहसान नहीं, अपने पर दया करना है। गुरु अर्जुनदेव जी के बारह-माहा में आता हैः

अढ़सठ तीर्थ सगल पुण्य, जीव दया परवान।

जब आप अपने आप पर दया करेंगे तो आपको अढ़सठ तीर्थों का पुण्य मिल जाएगा। जो अपने पर दया करेगा वही दूसरों पर दया कर सकता है। गुरु साहब कहते हैंः

हीरे जैसा जन्म है, कौडी बदले जाए।

दुनिया की मान-बड़ाई, विषय-विकार कौडियों की तरह हैं, इंसानी जामा हीरा है।

ऐसी दशा माहिं नित बरतें। हम क्योंकर समझाय सकें॥

जिनकी ऐसी हालत हैं उन्हें चाहे कितने भी सतसंग सुना लें, वे समझने के लिए तैयार नहीं होते। जो अपने ऊपर दया करता है वही समझ सकता है।

साध गुरु का कहा न मानें। मनमत अपनी ठानठनें॥

भजन करने वाले ही सन्त-महात्माओं का कहना मानते हैं। भजन करने से ही हमें किसी सन्त की ताकत के बारे में पता लगता है। देखने में तो सन्त-महात्मा हमारे जैसे ही इंसान लगते हैं। हम ज्यादा से ज्यादा उन्हें नेक इंसान कह लेंगे लेकिन जब हम नौं द्वारे खाली करके, सूरज चन्द्रमा सितारे पार करके गुरु स्वरूप को अपने अंदर प्रकट करते हैं और उनके साथ अंदर के मंडलों में जाते हैं तब हमें महात्मा की ताकत का पता लगता है। सन्तों की महिमा को सन्त ही जानते हैं। तुलसी साहब कहते हैंः

जे कोई कहे सन्त को चीन्हा, तुलसी हाथ कान पे दीन्हा।

सन्त इस संसार में छोटा सा जीवन व्यतीत करते हैं। प्रेमी जानते हैं कि सन्तों के चरण और उनके बोल कितने पवित्र हैं। उनके मुँह से निकला हुआ शब्द प्रेमियों के लिए हुक्म बन जाता है। गुरु गाविंद सिंह जी की काफी संगत थी लेकिन उनका शिष्य भाई नन्दलाल अंदर जाता था। वह जानता था कि गुरु गोविंद सिंह जी क्या हैं? उसने कहाः

तेरी ईक नज़र है, मेरी जिंदगी का सवाल है।

खर कूकर सम वे नर जानो। बिरथा उदर भरें॥

अब गुरु साहब प्यार से कहते हैं, ''जो लोग सन्तों की बात को नहीं समझते, मालिक की तरफ ध्यान नहीं लगाते वे इस तरह हैं जैसे गधे, कुत्ते पेट भरकर सोए रहते हैं।'' कबीर साहब कहते हैंः

पशु घड़ेन्दा नर घड़ा, चूक गया सींग पूँछ।
अक्ल वही हैवान की, बिना सींग बिन पूँछ॥

ब्रह्मा से बड़ी भूल हो गई वह सींग और पूँछ लगाकर पशु बनाने लगा था लेकिन दाढ़ी और मूँछ लगाकर इंसान बना दिया। विषय-विकार भोग लिए, शराब-कबाब खा पी लिए। परमात्मा ने हीरे जैसा जन्म दिया था इसे ऐसे ही खो दिया। हमारी ऐसी करतूतें देखकर ही सन्तों को ऐसे लफ़्ज़ कहने पड़ते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

करतूत पशु की मानस जात।
लोग विचारा करे दिन रात॥

जमपुर जाय बहुत पछतावें। वहाँ फिर उनकी कौन सुने॥

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''यम पकड़कर नर्कों में डाल देते हैं, उन्हीं लोगों की ऐसी हालत होती है जो मन का कहना मानते हैं।'' जिस तरह कत्ल करते समय इंसान अपने होश-हवास गँवा बैठता है कि मुझसे कौन पूछने वाला है? जब पुलिस वाले हथकड़ियाँ लगा देते हैं और मजिस्ट्रेट सजा सुनाता है; उस समय विनती करे कि मुझे माफ

कर दें ! मजिस्ट्रेट कहता है, ''जो गलती पहले की है उसकी सजा भोग ले आगे गलती मत करना।''

जन्म जन्म चौरासी भोगें। यह शरीर फिर नाहिं धरें॥

आप प्यार से कहते हैं कि पहले यह वृक्षों की योनि में, कीड़ों की योनि में, पक्षियों की योनि में फिर भूतों-प्रेतों की योनि में आता है। बाकी सब योनियाँ मिलती हैं लेकिन इंसान की योनि नहीं मिलती।

दुर्लभ देह मिली यह औसर। ऐसी कर जो बात बने॥

आप कहते हैं कि यह देह दुर्लभ है। परमात्मा ने यह हीरा देह बख्शकर हमें जन्मों-जन्मों से परमात्मा से बिगड़ी हुई बनाने का मौका दिया है। हमें सन्त-सतगुरुओं के सतसंग में जाकर पता लगता है कि किस तरह बिगड़ी बात को बनाना है और किस तरह परमात्मा के साथ जुड़कर अपनी भूल को बख्शवाना है।

सतगुरु सरन पकड़ ले अबकी। तो सब काज सरें॥

किसी महात्मा की संगत-सोहबत में जाकर ही तेरी बिगड़ी बनेगी। गुरु अमरदास जी महाराज कहते हैं:

अनेक योनि भरमावे, बिन सतगुरु मुक्त न पावे।
फिर मुक्त पावे लग चरणीं, बिन सतगुरु शब्द सुनावे॥

आप कहते हैं, ''चाहे कितनी योनियों में चक्कर लगा लें ! गुरु की शरण में जाकर, शब्द-नाम की कमाई करके ही मुक्ति मिलेगी।''

हित का बचन दया कर बोलें। तू नहिं कान सुने॥

महात्मा के दिल में हर एक के लिए जगह होती है। महात्मा का दिल मोम की तरह होता है। 'शब्द-नाम' की कमाई करने वाला ही किसी के दुःख को देखकर दुःखी होता है। वह रहम खाकर ही हमारी सेवा में लग जाता है लेकिन हम उनकी बात सुनने के लिए तैयार नहीं। भाग्यशाली ही उनकी बात को मानते हैं।

अंधा बहरा फिरे जगत में। कुल कुटुम्ब तेरी हानि करें॥

महात्मा हमें अंधा बहरा भी कहते हैं लेकिन हम कहते हैं कि हम दुनिया को देखते और सुनते हैं। हमारी यह बाहर चमड़े की आँखें खुद रोशन नहीं ये चन्द्रमा सूरज या बिजली की रोशनी के आसरे देखती हैं। दिन में कई बार काली अंधेरी आ जाती है कि कुछ दिखाई नहीं देता। कई घरों में भी ऐसा अंधेरा होता है कि बिना दीपक जलाए कुछ दिखाई नहीं देता। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

कहो नानक तिस भयो प्राप्त, जिस पूर्व लिखे का लेहणां।

परमात्मा ने हमारे अंदर ज्योत और शब्द की आवाज रखी है जिसे गुरुबानी, अकथकथा, हरिकथा और हरिकीर्तन कहकर बयान किया है। उस कीर्तन को वही समझते हैं जिनके मस्तक में परमात्मा पहले से लिख देता है। शब्द की आवाज और प्रकाश हमारे अंदर है हम उस शब्द की आवाज को सुन नहीं रहे और उस प्रकाश को देख नहीं रहे। हम माया के नशे में अंधे और बहरे हैं। गुरु अंगददेव कहते हैं:

मायाधारी अत अंधा बोला, शब्द न सुने बहो रोल घचोला।

कर सतसंग मान यह कहना। कान आँख फिर दोऊ खुलें॥

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''हमारा कहना मानकर सच्चे दिल से कमाई वाले महात्मा की संगत में जाएं। आप कमाई वाले महात्मा की संगत-सोहबत करके देखें आप पर भी उसका रंग चढ़ेगा।''

मैं बताया करता हूँ कि अग्नि के अंदर सेक और पानी के अंदर शीतलता है आप इनके नज़दीक बैठकर देखें ये अपना गुण खुद ही जाहिर कर देंगे। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

अंतरजोत निरंतर बानी।

रामनाम की ज्योति आप सबके अंदर जल रही है। मुसलमान उसे कलमा या बाँगे आसमानी कहते हैं। हिन्दु महात्मा उसे आकाशवाणी, रामधुन या अंदर का राग भी कह देते हैं।

देखे घट में जोत उजाला। सुने गगन में अजब धुनें॥

महात्मा अंधविश्वास नहीं देते। 'नाम' देते समय शिष्य को अच्छी तरह समझा देते हैं कि किस तरह अंदर के मंडलों में प्रकाश आएगा और धुनें सुनाई देंगी।

सुन्न जाय तिरबेनी न्हावे। हीरे मोती लाल चुने॥
महासुन्न में सुरत चढ़ावे। तब सतगुरु तेरे संग चलें॥

अब स्वामी जी महाराज अंदर के मंडलों के बारे में बताते हैं, ''तू अभ्यास के जरिए स्थूल दुनिया से सूक्ष्म, सूक्ष्म से कारण और कारण से पारब्रह्म में पहुँचेगा। हर मंजिल पर गुरु तेरे साथ होगा। महात्मा यह नहीं कहते कि अकेले अंदर जाओ, न ही कोई अकेले अंदर जा सकता है। जब हम स्थूल शरीर से पर्दा हटाकर सूक्ष्म में जाते हैं तो गुरु सूक्ष्म रूप धारण कर लेता है। जब हम कारण में जाते हैं तो गुरु कारण रूप धारण कर लेता है। जब हम तीनों पर्दें हटाकर पारब्रह्म में पहुँचते हैं वहाँ गुरु शब्द-रूप धारण कर लेता है। हम जैसे-जैसे ऊपर जाते हैं वह वैसे-वैसे हमारी अगुवाही करता है।'' गुरु साहब कहते हैं:

भूले सिक्ख गुरु समझाए, औजड़ जान्दे मार्ग पाए।

हमें जिस रास्ते के बारे में पता ही नहीं वहाँ हम बाहर ही भूले फिरते हैं। हम अकेले अंदर कैसे जा सकते हैं?

भँवरगुफा की बंसी बाजी। महाकाल भी सीस धुने॥

हमारा मन हमें बाहर ही लिए घूमता है अंदर जाने ही नहीं देता अगर मन से छुटकारा पाते हैं तो अंदर निचले मंडलों में काल है। आगे चलकर महाकाल है। जब आत्मा स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीनों पर्दें उतारकर ऊपर पारब्रह्म में पहुँचती है वहाँ शब्द की आवाज बाँसुरी की आवाज की तरह होती है जो आत्मा को खींचती है। तब महाकाल भी सिर फेर लेता है कि अब यह आत्मा मेरे दायरे से निकल गई है।

महाराज सावन कहा करते थे कि काल एक-एक आत्मा के लिए झगड़ा करता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि दरगाह में सन्त-सतगुरु हमारे वकील होते हैं। हम जानते हैं कि जिसने मुकद्दमा जीतना हो वह अच्छे से अच्छा वकील करता है। सन्त उस मुल्क की भाषा जानते हैं रोज वहाँ आते-जाते हैं। उनका मालिक के साथ मेलजोल है, वही हमारी वकालत कर सकते हैं।

अब चढ़ गई पुरुष दरबारा। वहाँ जाय धुन बीन गुने॥
ले दुरबीन चली आगे को। अलख अगम का भेद भने॥
यहाँ से आगे चली उमंग से। तब राधास्वामी चरन मिलें॥
मिला अधार पार घर पाया। लीला वहाँ की कहे न बने॥

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''सन्तों के बिना कोई वहाँ की लीला को लिख नहीं सकता, गमता को पा नहीं सकता। वहाँ 'शब्द' की आवाज बहुत मीठी और सुरीली है। वहाँ पहुँची हुई आत्माएं उस सुरीली आवाज को मगन होकर सुन रही हैं; यही आवाज उनका आधार है।''

स्वामी जी महाराज प्यार से कहते हैं, ''शुरू में हमारी आत्मा जिस अनामी देश से आई थी, सन्त-सतगुरु इसे वहीं पहुँचा देते हैं। वहाँ की महिमा को वहाँ पहुँचा हुआ ही बता सकता है। जिस तरह अगर कोई गूंगा मिश्री खाए ! वह मिश्री का स्वाद नहीं बता सकता। ज्यादा से ज्यादा खुश होकर दिखा सकता है।'' कबीर साहब कहते हैंः

गई पुतली लूंण की, थाह सिंध की लैंण।
अनाथ आप पानी भई, उल्ट कहे को बैंण॥

जिस तरह नमक की पुतली समुद्र की थाह लेने जाती है देखूँ ! समुद्र कितना गहरा है? लेकिन वह खुद समुद्र के पानी में पानी बन जाती है। इस तरह कौन वहाँ की महिमा को बयान कर सकता है? इस दुनिया में कौन सी ऐसी चीज़ है जिसका उदाहरण दे सकें।

आप कबीर साहब, गुरु नानकदेव जी, स्वामी जी महाराज, रविदास जी किसी भी महात्मा की बानी पढ़कर देखें ! सबने अपनी-अपनी भाषा में उन ठिकानों का जिक्र किया है। सच्चखंड पहुँचा महात्मा वहाँ की महिमा का गुणगान करता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैः

अगम अलख के ऊपर धावे, सतलोक की तब गत पावे।
ताँके ऊपर संतन धाम, नानक दास किया विश्राम॥

जो अलख, अगम लोक में नहीं पहुँचा वह सतलोक के बारे में क्या बयान कर सकता है? जो सतलोक में नहीं पहुँचा उसे सन्तों के धाम के बारे में क्या ज्ञान है कि सन्त किस धाम से आते हैं? वहाँ पहुँचे सन्त हमें बताते हैं कि वह शान्ति का देश है अगर आप अंदर जाएंगे तो आपको शान्ति मिल जाएगी। बाहर दुनिया के पदार्थों में शान्ति नहीं।

स्वामी जी महाराज ने हमें इस छोटे से शब्द में प्यार से बताया कि शान्ति आपके अंदर है अगर हम भजन-सिमरन नहीं करते तो काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के शिकार हो जाते हैं; **भ्रम** में पड़ जाते हैं। महात्मा की संगत में जाकर हमारे बंद कान खुल जाते हैं। अंदर की आँख खुल जाती है और हम अंदर उस प्रकाश को देखकर शान्ति प्राप्त कर सकते हैं।

हमारे गुरुओं ने हम पर बहुत दया-मेहर की है। हमें अपने घर का निमंत्रण दिया है। हम उनकी दया से ही उनका गुणगान करते हैं और अभ्यास में बैठते हैं। वे मालिक के प्यारे हमारे लिए अपना शान्ति का देश छोड़कर इस संसार में आते हैं। हम उनके तजुर्बे से फायदा उठाकर अपने जीवन को पवित्र बनाएं।

हमें चाहिए कि हम स्वामी जी के कहे मुताबिक 'शब्द-नाम' की कमाई करें। परमात्मा ने हमें जो अपनी भक्ति का समय दिया है इसका अच्छी तरह इस्तेमाल करें।

U U U

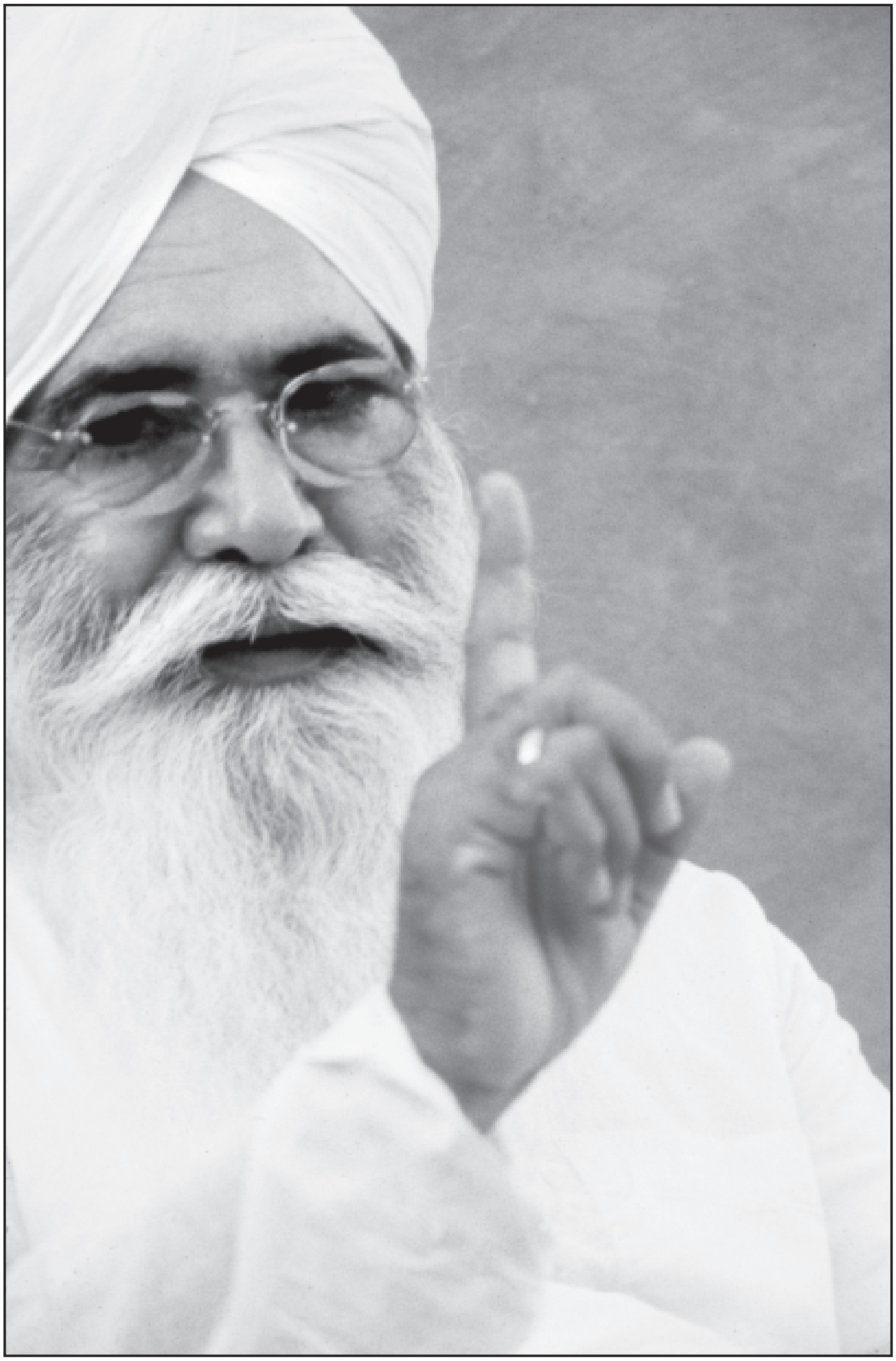

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

काल की रचना

28 दिसम्बर, 1988. *16 पी.एस. आश्रम*

एक प्रेमी :- महाराज जी ! मैं जानती हूँ कि आपने इस सवाल का जवाब पहले भी दिया होगा। मुझे काल के प्रति बहुत क्रोध आता है। काल बहुत ऊँची चीज़ होकर भी हम जीवों को अपने जाल में फँसाकर बहुत दुःख तकलीफें देता है। यहाँ आने से पहले मैंने एक किताब में पढ़ा है कि सर्वशक्तिमान भगवान ने हम आत्माओं को खुद ही काल के हवाले किया है।

मेरा सवाल यह है कि जब भगवान ने हम आत्माओं को काल के हवाले किया है तो काल हमें दुःख-तकलीफें क्यों देता है और अब जब हम अपने घर वापिस जाने की कोशिश कर रहे हैं तो काल हमें पहले से ज्यादा दुःख तकलीफें क्यों दे रहा है?

बाबा जी :- हाँ भई ! कल सतसंग में इस बारे में बहुत कुछ बताया गया। हमारा हर काम चलना-फिरना, उठना-बैठना, बोलना, सोना सब कुछ लेखे में है; हमें कोई देख रहा है। सब प्रेमियों को अनुराग सागर* पढ़ना चाहिए। इसमें कबीर साहब ने काल के बारे में बहुत कुछ खोलकर समझाया है कि सतपुरुष ने **काल की रचना** क्यों की? सतपुरुष ने आत्माएं काल को क्यों दी? काल किसी को कष्ट नहीं देता, वह हमारे कर्मों का भुगतान करवाता है।

मैं इस बारे में आपको एक कहानी सुनाता हूँ। एक पढ़ी-लिखी पंडिताईन औरत थी उसका जवान बेटा गुजर गया। वह बहुत रोई चिल्लाई और भगवान को भला-बुरा कहने लगी। हम लोग आमतौर पर भगवान में ही नुख्स निकालते हैं। भगवान ने आकर उससे पूछा, ''तू मुझे गालियाँ क्यों निकाल रही है? मैं तो किसी को नहीं मारता।''

*भवसागर

उस औरत ने भगवान से कहा, ''अगर मेरे बेटे को तूने नहीं मारा तो किसने मारा है?'' भगवान ने कहा, ''तेरे बेटे को काल ने मारा है।'' औरत ने काल को गालियाँ निकालनी शुरू की। काल ने आकर कहा, ''तू मुझे गालियाँ क्यों निकाल रही है?'' औरत ने कहा, ''तूने मेरे बेटे को मारा है।'' काल ने कहा, ''मैंने तेरे बेटे को नहीं मारा, तेरा बेटा सर्प के डसने से मरा है।''

औरत ने सर्प देवता को गालियाँ निकाली। सर्प ने सामने आकर कहा, ''तू मुझे क्यों दोष देती है? मैं तेरे बेटे के पैदा होने से पहले से ही यहाँ रह रहा हूँ। मुझे जो हुक्म था मैंने वह किया। यह सब समय ने किया है।'' औरत ने समय को गालियाँ निकालनी शुरू की। समय ने आकर कहा, ''चाँद सूरज का काम ऋतुएं बदलना और महीनो का ज्ञान करवाना है। जब किसी का समय निश्चित होता है तब मौत आ जाती है।'' औरत ने चाँद, सूरज को बुरा-भला कहा तो वे भी आ गए। उन्होंने कहा माता ! इसमें हमारा कोई दोष नहीं, यह तो कर्म देवता का काम है। जिसने जैसा कर्म किया, कर्म देवता ने उसकी किस्मत में वैसा ही लिख दिया। औरत ने कर्म देवता को भी कोसा, बुरा-भला कहा। कर्म देवता ने आकर कहा, ''ठंडे दिल से सोच ! कर्म कौन करता है? मैं तो कर्म भुगतवाने वाला हूँ। जिसका जैसा कर्म होता है मैं उससे वैसा ही भुगतान करवा देता हूँ।

औरत ने कहा, ''ठीक है ! मेरा बेटा अच्छा पढ़ा-लिखा था। उसने ही कोई बुरा कर्म किया होगा कि वह साँप के डसने से मर गया।''

प्यारेयो ! काल पर क्रोध करना हमारी गलती है। काल किसी को सुख-दुःख नहीं देता। काल की किसी से दुश्मनी नहीं। काल ने आगे अपने देवता बनाए हुए हैं। ये देवता किसी को सुख-दुःख नहीं देते, जो जैसा कर्म करता है ये उसी तरह उसके मस्तक पर लेख लिख देते हैं। समय आने पर हमारे साथ घटना घट जाती है। हम अपनी कमी नहीं देखते कि हमने क्या कर्म किए हैं और परमात्मा को दोष देते हैं।

महाराज कृपाल ऐसे लोगों के बारे में कहा करते थे कि ऐसे लोग परमात्मा को पत्थर मारते हैं।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''आपको 'नामदान' के समय यही बताया जाता है कि हम शरीर नहीं आत्मा हैं। शरीर हमें कर्मों का भुगतान करने के लिए मिला है। हर व्यक्ति कर्म करने के लिए स्वतंत्र है; चाहे अच्छे कर्म करे ! चाहे बुरे कर्म करे ! उन कर्मों का भुगतान उस व्यक्ति ने खुद ही करना है।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

कीता पाईऐ आपणा, ते घाल बुरे क्यों घालिए।

तुलसी साहब कहते हैं अगर आप 'शब्द नाम' की कमाई करें तो आपकी परमात्मा के साथ अनेकों जन्मों की बिगड़ी बन सकती है। हमें परमात्मा के बनाए हुए नियमों में नुख्स निकालने का कोई हक नहीं, हम उनमें कोई तबदीली भी नहीं कर सकते।

गुरु नानकदेव जी के पास बहुत से लोग बहस करने के लिए गए और उन्होंने आपसे पूछा, ''यह सृष्टि कब और कैसे रची गई?'' आपने उन्हें समझाकर कहाः

तिथि वार न योगी जाणें, ऋतु वहाँ न कोई।

पुराणों में नहीं लिखा कि धरती कब बनी अगर लिखा होता तो पंडित जानते होते और वह पुराणों में तारीख लिख देते। योगियों को पता होता तो वे भी तिथि और वार लिख देते कि यह सृष्टि किसने, कब और क्यों रची? अच्छा तो यह है कि हम परमात्मा के पास चलकर उससे सवाल करें कि तूने इस तरह के नियम क्यों बनाए हैं?

जां कर्ता सृष्टि को साजे, आपे जाणें सोई।

कुछ अंतरमुखी आत्माओं ने स्वामी जी महाराज से सवाल किए कि अब आप हमें लेने आए हैं। हम आपका भरोसा कैसे करें कि कहीं आप फिर हमें काल के हाथों में न सौंप दें ! आपने काल की रचना ही क्यों की है?

स्वामी जी महाराज उन आत्माओं को जवाब देते हैं कि काल की रचना जानबूझकर की गई है। खौफ के बिना जीव बस में नहीं रहते। जो भी आत्मा मेरे देश पहुँच जाएगी, मेरा संदेश सुन लेगी, मैं उसे दोबारा काल को नहीं सौंपूँगा।

अगर हमें इस सवाल को हल करना है तो अंदर 'शब्द' के साथ जुड़ना पड़ेगा। हमें अनुराग सागर पढ़कर तसल्ली कर लेनी चाहिए।

स्वामी जी महाराज ने अपनी बानी में काल और दयाल के बारे में बहुत कुछ खोलकर लिखा है कि काल को क्यों रचा गया? सच्चाई तो यह है कि सन्त इसी मसले को हल करवाने के लिए संसार में आते हैं। सन्त कहते हैं, ''आप आज का काम कल पर मत छोड़ो और 'शब्द-नाम' की कमाई करो।''

कबीर साहब कहते हैं, ''शुरू-शुरू में जब कुछ आत्माएं इस संसार में भेजी गई तब इन पर कर्मों का बोझ नहीं था, इसलिए ये आत्माएं जल्दी से भंडार में वापिस हो गई। फिर काल ने तन की रचना की और साथ ही मन भी लगा दिया। कर्म की क्रिया चला दी, जैसी करनी वैसी भरनी।''

प्यारेयो ! आत्मा चौरासी लाख योनियों में चक्कर काटकर दुःखी हो चुकी है। हर योनि के दुःखों को बयान नहीं किया जा सकता। जब हम इंसान के जामें में आकर ही सुखी नहीं तो किस जामें की आशाएं लगाए बैठे हैं। अंदर पहुँचा महात्मा हमें 'नाम' का भेद देकर परमात्मा के दरबार में पहुँचा देता है। वहाँ पहुँचकर पता लगता है कि हमने इस संसार में कितने दुःख पाए, फिर हम इस संसार की तरफ नहीं झाँकते।

जब सूफी सन्त बुल्लेशाह अंदर गए तो वहाँ पहुँची हुई आत्माओं ने आपका स्वागत किया, आपसे प्यार किया। वह शान्ति का देश है। बुल्लेशाह अपने कलाम में लिखते हैंः

बुल्ला रंगमहली जा चढ़या, लोक पुछंण आए खैर।
असां ऐह कुछ दुनिया तो वट्टया, मुँह काला नीले पैर॥

वहाँ पहुँची आत्माएं बुल्लेशाह से पूछती हैं, ''तूं यहाँ आ गया है, यहाँ तेरा स्वागत है। उस दुनिया से क्या कमाकर लाया है।'' बुल्लेशाह ने कहा, ''कुछ कमाकर नहीं लाया, मुँह काला और पैर नीले हैं।''

प्यारेयो ! अगर हम उस ताकत पर क्रोध करते हैं तो हम एक और कर्म बना लेते हैं। हमें क्रोध नहीं करना चाहिए, कर्मों के चक्कर से निकलकर 'शब्द-नाम' की कमाई करनी चाहिए।

अपराध करने वालों को ही आपत्ति होती है कि पुलिस क्यों बनाई गई ! जेल क्यों बनाई गई ! कानून क्यों बनाए गए ! शान्ति का जीवन व्यतीत करने वाले कानून का पालन करते हैं। उन्हें सरकारी कानूनों पर आपत्ति नहीं, वे सरकार को भला-बुरा नहीं कहते।

कुछ समय पहले चंडीगढ़ से एक पढ़ा-लिखा परिवार आया। सभी भाई-बहन एम.ए. पास थे। उन्हें सतसंग अच्छा लगा। उस परिवार के लोगों ने कहा कि हम रात को सोते समय परमात्मा को बहुत गालियाँ देते हुए कहते हैं, ''तूने हमें इतनी विद्या क्यों दी ! हम दुःखी क्यों हैं?''

मैंने उनसे कहा, ''आप जिस परमात्मा को गालियाँ देते हैं क्या आपने उसे देखा है? आप लोग 'नाम' लें, कमाई करें। बाकी बातें बाद में करेंगे।'' उस परिवार के लोगों ने 'नाम' लिया, थोड़ी बहुत कमाई करने लगे, सतसंग में आने लगे तो उन्हें समझ आई और वे बुरे कर्म से बच गए।

मैं आशा करता हूँ कि आप लोग ठंडे मन से अनुराग सागर और सन्तबानी मैगज़ीन अवश्य पढ़ेंगे। हो सकता है आपके बहुत से सवालों के जवाब इनमें से मिल जाएं। महात्मा सतसंग मे अपना तजुर्बा बताते हैं, हमें उनके तजुर्बे से फायदा उठाना चाहिए।

U U U

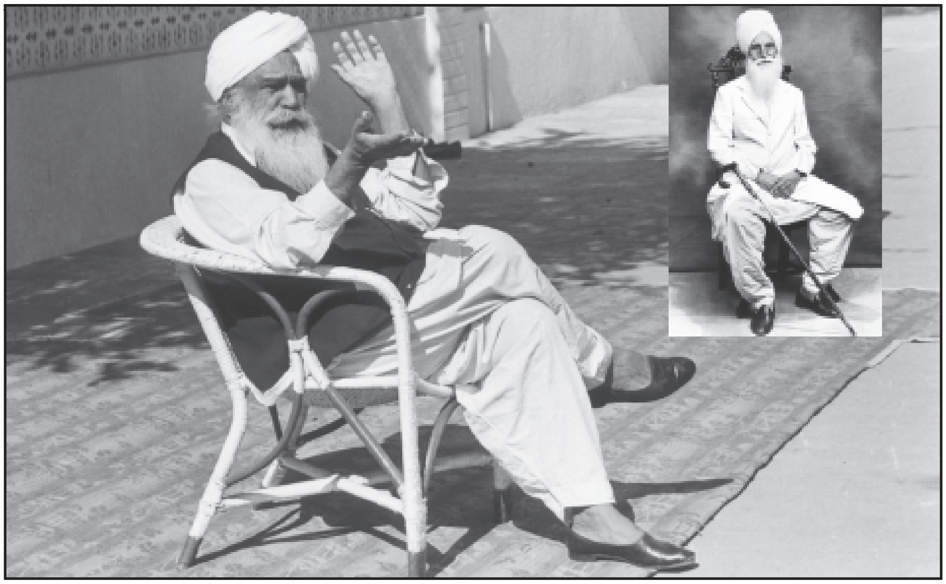

कृपाल यही संदेशा देता

कृपाल यही संदेशा देता, हवा यही सिखलाती है,
सिमरन करते चले चलो तो, मंजिल खुद मिल जाती है, (2)

छल फरेब के किले एक दिन, दुनियां में ढह जाते हैं, (2)
रेतों की दीवार देर तक, कभी नहीं टिक पाती है, (2)
सिमरन.....

इतने सारे पाप साथ में, इतने सारे पापी हैं, (2)
कृपाल ताकत तेरी जय हो, सबका भार उठाती है, (2)
सिमरन.....

ना कोई वैरी ना हीं बेगाना, जो भी है सब अपना है, (2)
एक नूर से सब जग उपजयों, गुरबानी बतलाती है, (2)
सिमरन.....

गुरु कृपाल तुम्हारी ऊँगली, थाम रखी है जिसने भी, (2)
उसके आगे काल काँपता, और मौत घबराती है, (1)
अजायब कृपाल तों मंगला माफी, (2)
जे जिंदड़ी सुख चाहती है, (2)
सिमरन.....